रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰ के॰ कॉलिज डुमरॉव

भाषा के विकास - सोपान

1- आंगिक भाषा
2- वाचिक भाषा
3- लिखित भाषा
4- यान्त्रिक भाषा

आंगिक भाषा — विकासवाद के अनुसार मनुष्य भी एक दिन अन्य पशुओं की कोटि का जीव था, अर्थात् उसकी चेष्टाएँ पशुओं - जैसी ही होती थीं। भाषा नाम की वस्तु उसे उपलब्ध नहीं थी और वह आंगिक चेष्टाओं या इंगितों की सहायता से अपनी बात अपनी योनि के दूसरे सदस्यों तक पहुँचाता था। पशुओं में भी कुछ अधिक बुद्धि-सम्पन्न होते हैं और कुछ कम; जैसे बैल की अपेक्षा कुत्ते में कुछ अधिक बुद्धि दीखती है और गदहे की अपेक्षा बन्दर में।

मनुष्य अपनी प्रारम्भिक अवस्था में भी अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक बुद्धि-सम्पन्न था, इसमें कोई सन्देह नहीं। अतः उसकी चेष्टाएँ भी अधिक अर्थद्योतक होती होंगी। बन्दर आनन्द के समय किलकारी भरते हैं, और क्रोध के समय किटकिटाते हैं, यदि कोई भगाने की चेष्टा करता है तो उसे डराने के लिए घुड़कते हैं। इस तरह किलकारी भरना, किटकिटाना और घुड़कना उनके मनोभाव की सूचक चेष्टाएँ हैं। कुत्ता मालिक को देखकर अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए पूँछ हिलाता है, उसके पैर से सटने की चेष्टा करता है।

आंगिक चेष्टाओं या इंगितों से भाव का द्योतन तो अवश्य हो जाता है, किन्तु वह जीवन-निर्वाह के स्थूल उपयोग तक ही सीमित है। भूख, प्यास, प्रेम, क्रोध आदि व्यक्त करने के लिए सिर, आँख, हाथ, पैर आदि की सांकेतिक चेष्टाओं से मनुष्य काम लेता रहा होगा। पशुओं में सामुदायिकता की जो सहज वृत्ति काम करती है वह आदि-मानव में भी रही होगी। शिकार के लिए अकेले जाने की अपेक्षा झुंड में जाना सुविधा और सुरक्षा दोनों ही दृष्टियों से अभिमत रहा होगा। झुंड बाँधने के लिए वह इतर मनुष्यों को कुछ अस्पष्ट ध्वनि के साथ, हाथ या सिर हिलाकर, इशारा करता होगा दूसरे मनुष्य भी स्वीकृति में सिर हिलाते होंगे या कुछ ऐसी ही चेष्टाएँ करते होंगे। इस तरह आंगिक चेष्टाओं से उसके जीवन का योगक्षेम चलता होगा। उसकी आंगिक चेष्टाएँ ही अर्थबोधन का प्रारम्भिक रूप और इस प्रकार भाषा का प्रथम सोपान है।

(1) इंगित या आंगिक भाषा अत्यन्त स्थूल, कामचलाऊ, जीवन-व्यापार की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित और भाव या विचार के सम्यक् वहन की शक्ति से रिक्त होती है। भूख-प्यास मिटाने के लिए भोजन आदि माँग लेना उससे सम्भव हो सकता है। किन्तु समस्या का समाधान, विचार का सम्प्रेषण, काव्य का निर्माण आदि उससे सम्भव नहीं है।

(2) दूसरी सीमा यह थी कि इसका प्रयोग प्रकाश में ही सम्भव था। अन्धकार में आंगिक चेष्टाओं से कोई काम नहीं लिया जा सकता।

(3) तीसरी चीज यह है कि आंगिक भाषा सामुख्य-सापेक्ष होती है अर्थात् जब तक वक्ता और श्रोता दोनों आमने-सामने है तभी तक इसका प्रयोग सार्थक हो सकता है। यदि कोई मुह फेरकर खड़ा हो और हम आँख या हाथ से कुछ इशारा करें तो कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा। आंगिक भाषा आँख की भाषा है और आँख का व्यापार प्रकाश में ही सम्भव है। इसलिए प्रकाश और सामुख्य, ये दोनों आंगिक भाषा की बोधगम्यता के लिए अनिवार्य हैं।

आंगिक भाषा इन तीनों बड़ी सीमाओं से आबद्ध थी, अतः मनुष्य की सांस्कृतिक प्रगति के सर्वथा अयोग्य थी। आंगिक भाषा से सम्पन्न अन्य जीवों का सांस्कृतिक या बौद्धिक विकास कहाँ हो पाया है? गदहों ने कोई काव्य नहीं रचा, बैलों ने किसी दर्शन का प्रणयन नहीं किया, बन्दरों के लिए वैज्ञानिक आविष्कार सम्भव नहीं हो सका, घोड़ों में चित्रकला का विकास नहीं हुआ, ऊँटों ने ताजमहल नहीं खड़ा किया।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव